भाषा-प्रवाह

भाग-२

द्वितीय कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

W5N6Y1

जम्मू-कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण : २०२४
संख्या :- २७.६ टी

©जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

सरकारी विद्यालयों में निःशुल्क वितरण हेतु

FREE DISTRIBUTION IN GOVERNMENT SCHOOLS

मुद्रण : सगुन ऑफसेट प्रेस, इकोटेक-१२, ग्रेटर नोएडा-२०१००६.

आमुख

मानव निर्माण ही शिक्षा का मूल उद्देश्य है। अतः हमारे देश में बच्चों के सर्वांगीण विकास को पोषित करने की एक समृद्ध परंपरा रही है। इसमें परिवार, रिश्तेदार,समुदाय, समाज एवं सीखने के औपचारिक संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका है। बच्चों के जीवन के आरंभिक आठ वर्षों में संचरित संस्कारों के विकास को समाहित करते इस समग्र दृष्टिकोण का उनके विकास, स्वास्थ्य, व्यवहार एवं आगामी वर्षों में संज्ञानात्मक क्षमताओं के प्रत्येक पक्ष पर आजीवन एक महत्वपूर्ण व सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० (NEP- 2020) ने 5+3+3+4 पाठ्यचर्या एवं शिक्षाशास्त्रीय संरचना की परिकल्पना की है जो आरंभिक पाँच वर्षों (३–८ आयु वर्ग) पर समुचित ध्यान देती है, जिसे आधारभूत स्तर की संज्ञा दी गई है। कक्षा १ एवं २ आधारभूत स्तर का एक अभिन्न अंग है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० इस स्तर के लिए एक विशिष्ट राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की संस्तुति करती है जो न केवल आधारभूत स्तर पर उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने में अपितु विद्यालयी शिक्षा के अगले चरणों में इसकी गतिशीलता सुनिश्चित करने के लिए भी संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होगी।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक 'भाषा–प्रवाह' भाग–२ की संरचना आधारभूत स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-FS 2022) के अनुरूप की गई है। इसमें बच्चों के लिए कक्षा में सीखने और परिवार तथा समुदाय में सार्थक अधिगम संसाधनों के साथ सीखने को महत्व देते हुए उनके व्यवहारिक जीवन से जुड़ने का प्रयास किया गया है।। बच्चों के सतत् एवं समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए ऐसी पाठ्यसामग्री का चयन किया गया है जिसमें अनुभव से सीखना, सांस्कृतिक समावेश, भारतीयता एवं भारतीय ज्ञान परंपरा, पंचकोशीय विकास, मूल्य शिक्षा, वैश्विक चिंतन, एवं स्थानीय संदर्भों का समावेश किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक को बच्चों के लिए आकर्षक एवं आनंददाई बनाने का पूरा प्रयास किया गया है। यद्यपि इसमें विषय–वस्तु का बोझ कम है, तथापि यह पाठ्यपुस्तक सारगर्भित है। इस पाठ्यपुस्तक में खिलौनों और खेलों के माध्यम से सीखने की अलग–अलग युक्तियों के साथ–साथ अन्य गतिविधियाँ और प्रश्न, जो बच्चों में तार्किक चिंतन और समस्या को सुलझाने की योग्यता विकसित करने के लिए प्रेरित करते हैं, को भी सम्मिलित किया गया है।

इसके अतिरिक्त पाठ्यपुस्तक में ऐसी पर्याप्त विषय सामग्री और गतिविधियाँ भी हैं जो बच्चों में पर्यावरण के प्रति आवश्यक संवेदनशीलता विकसित करने में सहायक हैं। शिक्षण प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक केवल एक माध्यम है, बच्चों में उन अनंत क्षमताओं को विकसित करने का, जिनके बीज उनमें पहले से ही विद्यमान है। अतः शिक्षक वर्ग से आग्रह है कि वे पाठ्यपुस्तक का उपयोग करते हुए और स्वतंत्र रूप से भी बच्चों को कक्षा–कक्ष के इर्द–गिर्द फैली अनंत प्रकृति से अवगत कराएँ, उन्हें स्वयं खोजबीन करके सीखने के लिए प्रोत्साहित करें, उन्हें अपनी बात कहने का अवसर दें, सही–गलत का निर्णय न लेते हुए बच्चों के साथ एक संवाद में शामिल हों। भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जो संप्रेषण के साथ–साथ सोचने समझने प्रश्न पूछने आदि में सहायक है। रोचक बात यह भी है कि जितना अधिक भाषा का प्रयोग विभिन्न कार्यों के लिए होता है उतनी ही तेजी से हमारी भाषा का विकास भी होता है। अतः इस पुस्तक में बातचीत करने,सुनकर कुछ करने,कहानी और कविताओं का आनंद लेने, नए शब्दों की पहचान के साथ खेलने, कला एवं संगीत से जुड़ी गतिविधियों में भाग लेने के अनेक अवसर अलग–अलग संदर्भों में दिए गए हैं।

जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड का मुख्य उद्देश्य परीक्षाओं का आयोजन करने के साथ–साथ शिक्षा में गुणवत्ता लाना भी है। बोर्ड 'भाषा–प्रवाह' भाग–२ की पाठ्यसामग्री विकसित करने के लिए पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति द्वारा किए गए कठोर परिश्रम की सराहना करता है। मैं समिति के सभी सदस्यों को उत्कृष्ट रूप से इस कार्य को संपन्न करने के लिए साधुवाद देता हूँ। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में बोर्ड के अकादमिक विभाग का सहयोग अविस्मरणीय है। अतः उनके प्रति मैं अपार कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। 'भाषा–प्रवाह' भाग–२ नन्हें–मुन्ने नौनिहालों के हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। जम्मू–कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड अपने प्रकाशनों को सतत स्तरीय एवं परिष्कृत करने के लिए सदा प्रतिबद्ध है। पुस्तक के अगले संस्करण हेतु आपके महत्वपूर्ण सुझाव एवं टिप्पणियाँ आमंत्रित हैं।

प्रो. (डॉ.) परीक्षित सिंह मन्हास
अध्यक्ष
जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

पुस्तक–परिचय

प्यारे बच्चों,

भाषा एक ऐसा सशक्त साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सकते हैं। भाषा के ज्ञान से न केवल हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है अपितु हम अपने समाज व देश के विकास में भी सहभागी बन सकते हैं। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिन्दी सम्पर्क भाषा के तौर पर उपयुक्त भाषा है। हिन्दी भाषा के माध्यम से हम अपने देश के अन्य नागरिकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर देश को उन्नति के पथ पर ले जा सकने के योग्य बनते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में भाषा की अपेक्षित चारों योग्यताओं–सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना के सम्यक् विकास का ध्यान रखा गया है। इस पुस्तक के अध्ययन से आपकी इन चारों योग्यताओं का विकास होगा। अक्षरज्ञान के बाद अगली सीढ़ी है शब्दों का निर्माण करना और फिर छोटे–छोटे वाक्यों का निर्माण करना सीखना। हिन्दी भाषा की प्राथमिक इकाई अक्षर–ज्ञान आप सीख चुके हैं। इस वर्ष आप छोटे–छोटे शब्दों को जोड़कर पढ़ना और लिखना सीखेंगे। उसके बाद वाक्य–निर्माण करना सीखेंगे जिससे आप सुंदर–सुंदर कविताओं और मधुर एवं रोचक कहानियों का आनंद ले पाएँगे।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

सहयोग

श्री शब्बीर अहमद, सहायक प्राध्यापक, राजकीय एम.ए.एम. महाविद्यालय, जम्मू।
श्री चन्द्र कुमार शर्मा, अकादमिक अधिकारी, जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड।
श्री राकेश कुमार, वरिष्ठ व्याख्याता, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, राबता।
श्री उदय प्रकाश सिंह, वरिष्ठ व्याख्याता, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खरोट।
सुश्री इंदुलेखा, शिक्षिका, राजकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय, बुद्धि।
सुश्री समता डोगरा, शिक्षिका, मॉडल अकादमी, बी.सी.रोड, जम्मू।
सुश्री ममता कौर, शिक्षिका, मॉडल अकादमी, बी.सी.रोड़, जम्मू।
सुश्री अलका शर्मा, शिक्षिका, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, अलोरा, जम्मू।

समीक्षा समिति

डॉ. अजय कुमार सिंह, प्रभारी निदेशक, तुलनात्मक धर्म एवं सभ्यता अध्ययन केंद्र, केंद्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू।
डॉ. सीमा सूदन, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय, खौड़ ,जम्मू ।
डॉ. प्रवीण कुमारी, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महिला महाविद्यालय, परेड, जम्मू।
श्रीमती सीमा कुमारी, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय, अखनूर, जम्मू।
श्री देवेन्द्र सिंह, वरिष्ठ व्याख्याता, राजकीय उच्चतर विद्यालय, तलूर, साम्बा।
डॉ. सुनील कुमार, व्याख्याता संविदा, राजकीय महिला महाविद्यालय, गांधीनगर, जम्मू।

सदस्य समन्वयक

डॉ. यासिर हमीद सिरवाल, उपनिदेशक अकादमिक, जम्मू–कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, जम्मू संभाग।
श्री चन्द्र कुमार शर्मा, अकादमिक अधिकारी, जम्मू–कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, जम्मू संभाग।
सुश्री सईद काशिफ हाशमी, अकादमिक अधिकारी, जम्मू–कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, जम्मू संभाग।

आभार

मन के भावों की अभिव्यक्ति ही भाषा कहलाती है। सृष्टि पर जब से जीव–जगत की उत्पत्ति हुई है तब से किसी न किसी रूप में भाषा का अस्तित्व रहा है। कभी सांकेतिक भाषा के रूप में तो कभी पत्थरों एवं शिलालेखों पर अंकित आकृतियों के रूप में। मानव–सभ्यता के विकास के साथ–साथ भाषा भी विकसित एवं परिवर्तित होती गई। विश्व की लगभग 3,000 भाषाओं में हिंदी, 'भारोपीय' भाषा परिवार की एक प्रमुख भाषा है। हिंदी भाषा पढ़ने एवं लिखने में अत्यंत सरल एवं सरस है तथा संस्कृत से उद्‌गम होने के कारण इसकी लिपि भी अन्य भाषाओं की अपेक्षा स्पष्ट एवं अत्यंत वैज्ञानिक है। यही कारण है कि आज हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड द्वारा अनेक शिक्षकों, विषय–विशेषज्ञों, शिक्षा शास्त्रियों एवं भाषाविदों की विभिन्न कार्यशालाएं आयोजित करके हिंदी भाषा की प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक 'भाषा–प्रवाह' भाग–२ को विकसित किया गया है। इसे आधारभूत स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF–FS 2022) में वर्णित पाठ्यचर्या के लक्ष्यों के अनुरूप तैयार करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक दक्षता आधारित सामग्री को सरल,रोचक और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। इसमें भाषा के विकास के साथ–साथ सतत् सीखने की कला, समस्या समाधान, तार्किक और रचनात्मक चिंतन के विकास पर भी बल दिया गया है। बच्चों को भारतीय ज्ञान परंपरा, सांस्कृतिक मूल्य, राष्ट्र प्रेम, चरित्र–निर्माण, नैतिकता, करुणा एवं पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता से परिचित कराने की दृष्टि से पाठ्यसामग्री का चयन किया गया है।

इस पुस्तक में पाँच ऐसे संदर्भों को चुना गया है जो बच्चों के जीवन से जुड़े हैं– **परिवार, जीव-जगत, हमारा खान-पान, त्योहार और मेले तथा हरी-भरी दुनिया।**

इन संदर्भों के अंतर्गत ऐसी कविताओं और कहानियों का समावेश है, जो आनंददायी भाषा–शिक्षण के साथ–साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

'भाषा–प्रवाह' भाग–२ के निर्माण के लिए गठित पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति का मैं आभार प्रकट करता हूँ, जिनके कठोर परिश्रम के फलस्वरूप यह पुस्तक इस रूप में आ सकी। इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों एवं प्रकाशकों के प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मैं जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) परीक्षित सिंह मन्हास जी का अंतर्मन से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी दूरदर्शिता,योग्यता, विनम्रता एवं प्रेरणा के फलस्वरूप यह पुस्तक इस रूप को प्राप्त कर सकी। बोर्ड की सचिव सुश्री मनीषा सरीन जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने पुस्तक–निर्माण में समय–समय पर समिति का मार्गदर्शन किया।

पुस्तक निर्माण के इस महान् कार्य को सुसंपन्न करने के लिए बोर्ड के अकादमिक विभाग के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। पाठ्यपुस्तक निर्माण संबंधी कार्यों में तकनीकी सहयोग के लिए जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड के सभी सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ।

अंत में अकादमिक अधिकारी चन्द्र कुमार शर्मा का आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने 'भाषा–प्रवाह' पुस्तक–शृंखला के निर्माण में आरंभ से समाप्ति तक सूत्रधार की भूमिका निभाई। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप पाठ्यपुस्तक निर्माण का यह हमारा प्रथम प्रयास था।अतः स्वाभाविक है कि इसमें अनेक संशोधन अपेक्षित होंगे। पुस्तक के अगले संस्करण के लिए आपके अमूल्य सुझाव एवं टिप्पणियाँ सादर आमंत्रित हैं।

प्रो.(डॉ.) सुधीर सिंह
निदेशक अकादमिक
जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता**,
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए
दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

MEDHAVI SHARMA

देखें, कहाँ क्या है

J7H1Y9

इकाई १ : परिवार

१. दादी जी की सीख (कहानी)

२. माँ (कविता)

३. घर वरिवार (कविता)

४. दादाजी और मैं (कहानी)

इकाई २ : रंग ही रंग

५. पंतग (कविता)

६. तीन रंग (एकांकी)

७. इंद्रधनुष (कहानी)

८. चीनू बत्तख (कहानी)

इकाई ३. हरी भरी धरती

९. चार दिशाएं (कविता)

१०. गाजर (कहानी)

११. वीर किसान (कविता)

१२. तालाब (कहानी)

१३. चिड़िया (कविता)

इकाई ४ : मित्रता

१४. नटखट बंदर (कविता)

१५. मित्रता (जातक कथा)

१६. पिकनिक (कहानी)

इकाई ५ : आकाश

१७. देखो देखो आए बादल (कविता)

१८. प्यारे प्यारे चंदा मामा (कविता)

पाठ एक

दादी जी की सीख

V9B2M5

बंटी एक शरारती लड़का था। वह पशुओं को बहुत परेशान किया करता था और अपने मित्रों से भी झगड़ा करता था। उसने झूठ बोलना भी आरंभ कर दिया था।

एक बार बंटी की दादी जी घर आईं। उनके आने से बंटी बहुत खुश हो गया। एक दिन एक लड़का बंटी की उलाहना देने उसके पिता के पास आया। बंटी ने उसे धक्का दिया था। इसी तरह प्रतिदिन कोई न कोई बंटी की शिकायत करने घर आता था। यह सब देखकर दादी जी को एक उपाय सूझा। दादी जी ने बंटी को अपने पास बुलाया। दोपहर के समय दादी जी बंटी को बगीचे में ले गईं। उन्होनें बंटी को एक छोटा पौधा उखाड़ने को कहा। बंटी ने पौधा आसानी से उखाड़ दिया। दादी जी ने उस पौधे को गमले में लगा दिया। अब उन्होंने एक बड़ा पौधा उखाड़ने को कहा। बंटी ने पूरा ज़ोर लगाया पर पौधा नहीं उखड़ा।

बंटी बोला, ''दादी जी इसे उखाड़ना तो बहुत कठिन है।'' दादी जी बोलीं, ''बेटा बिलकुल ऐसा ही हमारी आदतों के साथ है। अगर हम अपनी बुरी आदतों को शुरू से ही सुधार लें तो ठीक है, नहीं तो बड़े होने पर इन्हें सुधारना कठिन हो जाता है।''

बंटी दादी जी की बात ध्यान से सुन रहा था वह बोला, ''मैं आपकी बात समझ गया। अब मैं कभी कोई शरारत नहीं करूँगा।'' दादी जी ने देखा कि कुछ ही दिनों में बंटी एक अच्छा बच्चा बन गया।

शब्दार्थ :–

प्रतिदिन	–	हर दिन
उपाय	–	तरीका
उलाहना	–	शिकायत
आदत	–	स्वभाव
सुधार	–	ठीक करना

बातचीत के लिए

(क) बंटी कैसा लड़का था?

(ख) बंटी किसे परेशान करता था?

(ग) दादी जी ने बंटी को क्या उखाड़ने के लिए कहा?

(घ) इस पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

(ङ) बड़े होने पर कैसी आदतों को सुधारना कठिन हो जाता है

अभ्यास कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) बंटी के घर कौन आया?

(ख) दादी जी बंटी को कहाँ ले गईं ?

(ग) लड़का बंटी के पिता जी के पास क्यों आया?

2. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

गमले, शरारती, पौधा, उपाय

(क) दादी जी ने उसे..... में लगा दिया।

(ख) बंटी एक ..... लड़का था।

(ग) दादी जी को एक .....सूझा।

(घ) बंटी ने..... आसानी से उखाड़ दिया।

भाषा की समझ।

1. विराम–चिह्न का सही प्रयोग करते हुए नीचे दिए गए वाक्यों को अपनी स्मरण पुस्तिका में लिखिएः–

दादी जी इसे उखाड़ना बहुत मुश्किल है

वह अपने मित्रों से झगड़ा करता था।

2. एक शब्द के अनेक शब्द लिखें।

लड़का	–	लड़के
बच्चा	–	.....
पौधा	–	.....
गमला	–	.....
बेटा	–	.....

चित्रकारी

अपने मनपसंद (रूचिकर) फल के वृक्ष का चित्र बनाकर उसमें रंग भरें।

पाठ दो

माँ

Y8G9T4

माँ है मेरी सबसे प्यारी,
भोली भाली जग से न्यारी।
मीठे–मीठे इसके बोल,
कानों में दे मिसरी घोल।

घर का करती सारा काम
उसे न दो–पल भी आराम।
सच बोलो तो मेरे घर की,
मेरी माँ से ही है शान।

सारी खुशियों का संसार,
माँ है जीने का आधार।
नमन करूँ मैं रोज़ सवेरे,
साथ सदा तुम रहना मेरे।

–राकेश कुमार

बातचीत के लिए

(क) अपनी माँ के बारे में बताइए।

(ख) क्या आपके मित्र अपनी माँ को अलग नामों से पुकारते है? उनकी सूची बनाइए।

(ग) क्या आप अपनी माँ का कहना मानते हैं?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:–

(क) सबको अपनी माँ क्यों प्यारी लगती है?

(ख) हमें अपनी माँ के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

(ग) माँ को प्रतिदिन नमन क्यों करना चाहिए?

शब्दों का खेल

(क) प्यारी–.....न्यारी..... (ख) ध्यान–.....

(ग) बोल– ..... (घ) संसार–.....

सही शब्द चुनिए

(क) कानों में दे.....घोल। (मिसरी / मिठाई)

(ख) घर का करती..... काम। (नाम / काम)

(ग) माँ है ..... का आधार। (पीने / जीने)

(घ) सबका रखती पूरा.....। (ध्यान / ज्ञान)

शब्द बनाइए

(क) सब
- का – .....
- के – .....
- की – .....

(ख) रख
- ता – .....
- ते – .....
- ती – .....

पाठ तीन

घर–परिवार

मेरी खुशियों का संसार,
मेरा घर मेरा परिवार।
सबसे सुंदर सबसे न्यारा,
मेरा घर है सबसे प्यारा।
माँ मेरी है जग से न्यारी,
खुशियों भरी लगती फुलवारी।
दादा–दादी, काका–काकी,
कितना प्यार जताते हैं,
खुशियों से है घर भर जाता,
पापा घर जब आते हैं।
नए–नए मैं खेल खेलता,
अपने भाई–बहन के संग,
प्यार है मिलता इतना घर में,
फीके हैं दुनिया के रंग।
चाहे कहीं भी घूम आओ पर,
घर आकर ही मिले आराम,
हँसी खेल में हो जाते हैं,
मिलकर जब करते हैं काम।
मिलकर हमने जो भी देखे,
सपने सब होते साकार,
जीवन जीने की शिक्षा भी,
हमको देता है परिवार।

–राकेश कुमार

बातचीत के लिए

(क) आपके परिवार में कितने सदस्य हैं?

(ख) क्या आप अपने दादा–दादी के साथ रहते हैं?

(ग) क्या आप अपने घर को साफ़–सुथरा रखते हैं?

(घ) क्या आप घर के कामों में बड़ों का सहयोग करते हैं?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) अपना घर परिवार हमें क्यों अच्छा लगता है?

(ख) मिलकर काम करने से क्या होता है?

(ग) हमारे सपने कैसे साकार होते है?

(घ) परिवार से हमें कैसी शिक्षा मिलती है?

(ङ) हम अपने परिवार का सहयोग कैसे कर सकते है?

शब्दों का खेल

(क) संसार– परिवार (ख) न्यारी–........................

(ग) संग– .... (घ) काम– ....

पंक्तियाँ पूरी कीजिए।

(क) चाहे कहीं भी घूम आओ पर,

....

हँसी खेल में हो जाते हैं,

....

(ख) मिलकर हमने जो भी देखे

....

जीवन जीने की शिक्षा भी।

....

सृजन संसार

अपना परिचय–पत्र (आई.डी.कार्ड) बनाइए।

परिचय–पत्र

नाम–.....

अभिभावक का नाम–.....

विद्यालय का नाम–.....

विद्यालय का पता –.....

घर का पता–.....

अभिभावक का फोन नंबर–.....

विद्यार्थी के हस्ताक्षर

अध्यापक के हस्ताक्षर

शब्द लड़ी आगे बढ़ाइए।

(क) सारा–रात– .....ताला.....–.....–.....

(ख) काम–मकान–नमक.....–..... –.....

उलटे अर्थ वाले शब्द चुनकर लिखिए।

(क) नया .....

(ख) निकट .....

(ग) अपना .....

(घ) अंदर .....

(ङ) दिन .....

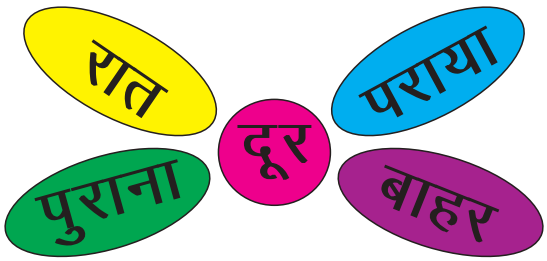

अपने घर–परिवार के बारे में पाँच वाक्य लिखें।

1 ..... ।

2 ..... ।

3 ..... ।

4 ..... ।

5 ..... ।

पाठ चार

दादाजी और मैं

E2N1E3

मुझे अपने दादा जी से बहुत प्यार है। मैं दादा जी की हर आज्ञा का पालन करती हूँ। दादा जी बहुत सरल स्वभाव के हैं। वे सबसे हँसकर बात करते हैं। सुबह जल्दी उठकर व्यायाम करना उनकी एक अच्छी आदत है।

शाम के समय दादा जी मुझे अपने साथ बाहर घूमने ले जाते हैं। दादा जी का और मेरा संबंध अनोखा है। ''दादा जी, हमारे सिर पर कितने बाल हैं?'' मैं पूछती हूँ। वे सुनकर हँस देते हैं।

दादा जी समयनिष्ठ हैं और अपने सभी कार्य समय पर पूरे करते हैं। वे कहते हैं, ''हमें समय का सोच समझकर उपयोग करना चाहिए।'' दादा जी मेरे साथ खेलते हैं। जब उनका चश्मा खो जाता है तो मैं ढूँढकर लाती हूँ। वे बरामदे में बैठकर

अपनी मन पसंद पुस्तक पढ़ते हैं। दादा जी बाज़ार से मेरी मनपसंद मिठाई लाते हैं। उनको मीठा खाना बहुत पसंद हैं। वे मुझे सुबह और रात को ब्रश करने के लिए कहते हैं। रात को मैं दादा जी की गोद में सिर रखकर सो जाती हूँ। वे मुझे जीवन में सदा सच बोलने और कर्तव्यनिष्ट रहने की सीख देते हैं। मैं प्रार्थना करती हूँ कि मैं भी अपने दादा जी की तरह बनूँ।

शब्दार्थ

बहुत	:	अधिक
सरल	:	साधारण
स्वभाव	:	व्यवहार
व्यायाम	:	कसरत
अनोखा	:	अद्‌भुत
समयनिष्ठ	:	समय का पालन करने वाला
कर्तव्यनिष्ठ	:	अपने काम को मन लगाकर करने वाला।
सीख	:	प्रेरणा

बातचीत के लिए

(क) क्या आप भी अपने दादा जी से बहुत प्यार करते हैं?

(ख) यदि आपको मिठाई की दुकान पर खड़ा कर दिया जाए और आपको एक मिठाई खरीदने के लिए कहा जाए तो आप कौन– सी मिठाई खरीदेंगे और क्यों?

(ग) आप अपने दादा जी के साथ कहाँ–कहाँ घूमने जाते हैं?

(घ) आप अपने मामा–मामी और नाना–नानी के घर कब–कब जाते हैं?

लिखिए

1. दादा जी को क्या खाना पंसद है?
2. दादा जी का क्या खो जाता है?

शब्दों का खेल

(1). समझिए और लिखिए

(क). हँस–.....हँसकर..... (ख). सुन–.....

(ग). देख–..... (घ). चल–.....

(2). ओ ' ो ' की मात्रा लगाकर शब्द बनाइए।

क
- ट–.....कोट.....
- मल–.....
- ना–.....

म
- ती–.....मोती.....
- टा–.....
- र–.....

(3). वर्ग पहेली से नाम वाले शब्द ढूँढकर लिखिए

_____	चाँ	द	प	लु	आ	_____
_____	पू	ही	तं	ज	स	_____
_____	ब	र	ग	द	मा	_____
_____	सि	ता	रे	र्प	न	_____
_____	सू	र	ज	ण	कु	_____

भाषा की समझ

(1).सही वर्ण चुनकर शब्द पूरे कीजिए।

(क). स.....क (ढ़ / ड़)

(ख). .....मीन (ज़ / फ़)

(ग). ब.....ना (ड़ / ढ़)

(घ). .....सल (फ़ / ढ़)

(2). शिक्षक की सहायता से टोकरी में रखे फलों के नाम हिंदी, अंग्रेजी और अपनी मातृभाषा में लिखिए–

हिंदी	अंग्रेजी	मातृभाषा
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____

चित्रकारी

दाँतों की सफाई में कौन–कौन–सी वस्तुएं काम में लाई जाती है। उन पर (.✓.......) लगाएँ तथा उनसे वाक्य बनाएँ–

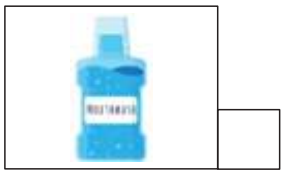

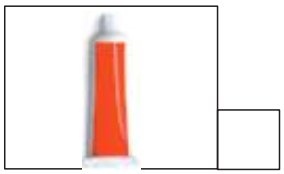

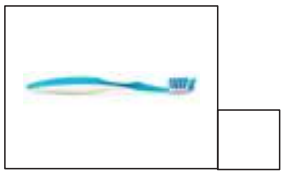

____

____

____

____

____

____

पाठ पाँच

पतंग

H1T8K2

पापा लाए एक पतंग,
मन में जागी नई उमंग,
उड़ाऊँगा अब मैं भी इसको,
मिलकर अपने भाई संग।

पतंग है मेरी रंग बिरंगी,
पक्की बहुत है इसकी डोर,
दूर गगन में उड़ती जाती,
छूने आसमान का छोर।

ढील जो दूँ तो गोते खाए,
खींचूँ डोर रॉकेट बन जाए,
ऊपर, नीचे, दाएँ,बाँए
नाच हवा में खूब दिखाए।

पेंच लड़ाए जो भी इससे,
उसका घमंड करदे चूर,
बचना चाहे जो कोई, इससे
पतंग को अपनी रखे दूर

– राकेश कुमार

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
उमंग	खुशी	घमंड	अभिमान
गगन	आकाश,आसमान	खूब	बहुत
गोते खाना	डुबकी–लगाना	डोर	धागा (पंतग उड़ाने वाला)

नवीन शब्द

पतंग	उड़ाऊँगा	उमंग	रंग–बिरंगी
पक्की	ढील	रॉकेट	दाँए–बाँए
पेंच	घमंड	छोर	खींचूँ

बातचीत के लिए

प्रश्नः–

(क). क्या आपको पतंग उड़ाने में आनन्द आता है?

(ख). आप किस रंग की पतंग उड़ाना पंसद करते हैं?

(ग). पतंग के पेंच लड़ाने में आपको कैसा लगता है?

लिखिए

(क). आप पतंग किसके साथ मिल कर उड़ाते हैं?

(ख). डोर खींचने पर पतंग क्या बन जाती है?

(ग). पतंग उड़ाने के लिए कैसी डोर चाहिए?

कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए

(क). पतंग है मेरी रंग–बिरंगी

.....

दूर गगन में उड़ती जाती

.....

(ख). पेंच लड़ाए जो भी इससे

.....

बचना चाहे जो कोई इससे

.....

मिलान करें

(अ)	(ब)
गगन	खुशी
हवा	आकाश
घमंड	पवन
उमंग	अभिमान
पक्की	किनारा
छोर	मजबूत

वचन बदलें

धागा	–	धागे
खिलौना	–	.....
लड़का	–	.....
समोसा	–	.....
गुब्बारा	–	.....
कुत्ता	–	.....

सृजन संसार

अपनी कॉपी में पतंग का चित्र बनाकर पाँच त्योहारों के नाम लिखिए जिन पर पतंग उड़ाई जाती है।

पाठ छः

तीन रंग

W7R9C7

पात्रः माँ और रीमा।

(आज रविवार है। पिताजी के दफ्तर की छुट्टी है और बच्चों के स्कूल की। रविवार को सब थोड़ी देर से उठते हैं। लेकिन रीमा आज शीघ्र उठ गई।)

माँ : (रीमा को कमरे से आता देख) क्या बात है, रीमा? आज सूरज कहाँ से निकला? जल्दी उठ गई।

रीमा : माँ, मेरी अध्यापिका ने सभी छात्रों को दो–दो चित्र बनाने को दिए हैं।

माँ : कैसे चित्र?

रीमा : सब्ज़ियों के।

माँ : तुम्हें कौन–कौन सी सब्ज़ियों के चित्र बनाने है।

रीमा : माँ, मुझे गृहकार्य में बैंगन और गाजर के चित्र बनाने को मिले हैं।

माँ : ठीक है, तुम चित्र बनाओ। तब तक मैं नाश्ता बना कर लाती हूँ।

(इतना कहकर माँ चली गई और रीमा चित्र बनाने में व्यस्त हो गई। अचानक रीमा के रोने की आवाज़ आई। माँ भागती हुई रीमा के कमरे में गई।)

माँ : (घबराते हुए) क्या हुआ? रो क्यों रही हो?

रीमा : (हिचकियाँ लेते हुए) माँ मेरे रंग समाप्त हो गए। अब मैं चित्र में रंग कैसे भरूँगी? आज रविवार है, बाजार बंद होगा। कल अगर मैं चित्र लेकर नहीं गई तो मुझे डाँट पड़ेगी।

माँ : (शांत करते हुए) ध्यान से देखो! तुम्हारे पास इतने रंग हैं, कोई तो बचा होगा?

रीमा : (रोते हुए) केवल लाल, पीला और नीला रंग है माँ।

माँ : (मुस्कुराते हुए) बन गई बात!

रीमा : (आँसू पोंछते हुए) क्या बात बन गई, माँ? मुझे तो हरा, नारंगी और बैंगनी रंग चाहिए।

माँ : (चुटकी बजाते हुए) अब देखो जादू!

रीमा : (आश्चर्य से) कैसा जादू?

माँ : अब जैसा मैं कहती हूँ ठीक वैसे ही करो। डिब्बी से थोड़ा लाल और थोड़ा नीला रंग निकालो।

रीमा : निकाल दिए, माँ।

माँ : इन्हें मिलाओ।

रीमा : माँ, रंग खराब हो जाएँगे।

माँ : अरे! रंग मिलाओ तो सही।

रीमा : (रंग मिलाते हुए अचंभित होकर) माँ, यह तो बैगनी रंग बन गया। माँ, यह तो सच में जादू हो गया।

माँ : देखो! मैंने कहा था न।

रीमा : (उदास होते हुए) पर माँ, मुझे तो हरा और नारंगी रंग भी चाहिए।

माँ : (चुटकी बजाते हुए) हम जादू से हरा और नारंगी रंग भी बना लेंगे।

रीमा : (खुश होते हुए) सच में!

माँ : हाँ, चलो थोड़ा नीला और पीला रंग आपस में मिलाओ।

रीमा : (रंग मिलाते हुए) माँ, यह तो हरा रंग बन गया। पर नारंगी?

माँ : अब लाल और पीला रंग आपस में मिलाओ।

रीमा : (खुशी से तालियाँ बजाते हुए) यह तो नारंगी बन गया। माँ, आपने तो सच में जादू कर दिया।

माँ : (मुस्कुराते हुए) यह जादू नहीं विज्ञान है। लाल, पीला और नीला प्राथमिक रंग हैं। किन्हीं भी दो रंगों को मिलाकर जो रंग बनता है उसे द्वितीयक रंग कहते हैं।

रीमा : (खुशी से झूमते हुए) माँ, मुझे समझ में आ गया कि यह जादू नहीं विज्ञान है। कल यह जादू सबको दिखाऊँगी। (फिर रीमा अपना गृहकार्य पूरा कर लेती है।)

शब्दार्थ

गृहकार्य	–	घर में किया जाने वाला कार्य
व्यस्त	–	काम में लगा हुआ
हिचकी	–	ज़ोर ज़ोर से सांस लेना
अचंभित	–	हैरान
प्राथमिक	–	पहले का
द्वितीयक	–	दूसरे क्रम का

बातचीत के लिए

(क) रीमा सुबह शीघ्र क्यों उठ गई?

(ख) रीमा को कौन–कौन सा चित्र बनाना था?

(ग) रीमा क्यों रोने लगी?

(घ) डिब्बे में कौन–से तीन रंग बचे थे?

(ङ) आपका मनपसंद रंग कौन–सा है?

लिखिए

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) बैंगनी रंग कैसे बनता है?

(ख) नारंगी रंग कैसे बनता है?

(ग) नीले और पीले रंग को मिलाने से कौन–सा रंग बनता है?

2. रिक्त स्थान भरें–

रविवार, द्वितीयक, विज्ञान, प्राथमिक

(क). लाल, पीला और नीला..... रंग हैं।

(ख). बैंगनी, हरा और नारंगी.....रंग हैं।

(ग). आज..... है बाज़ार बंद होगा।

(घ). यह जादू नहीं..... है।

भाषा की समझ

1. लाल, पीला, नीला और हरा ये सब रंगों के नाम हैं।

बताओ ये सब किसके नाम हैं?

1. चीन, जापान, अमरीका .....**देश**.....
2. शेर, हाथी, बकरी.....
3. धोती, कुरता, साड़ी.....
4. मोर, कबूतर, उल्लू.....
5. आलू, बैंगन, भिंडी.....

2. मैं स्त्रीलिंग हूँ, तो पुल्लिंग कौन? लिखिए–

(क) माता – .....पिता.....

(ख) अध्यापिका – .....

(ग) छात्रा – .....

(घ) रानी – .....

चित्रकारी

1. दिए गए रंगों को मिलाकर नए रंग बनाएं और चित्र में भरें–

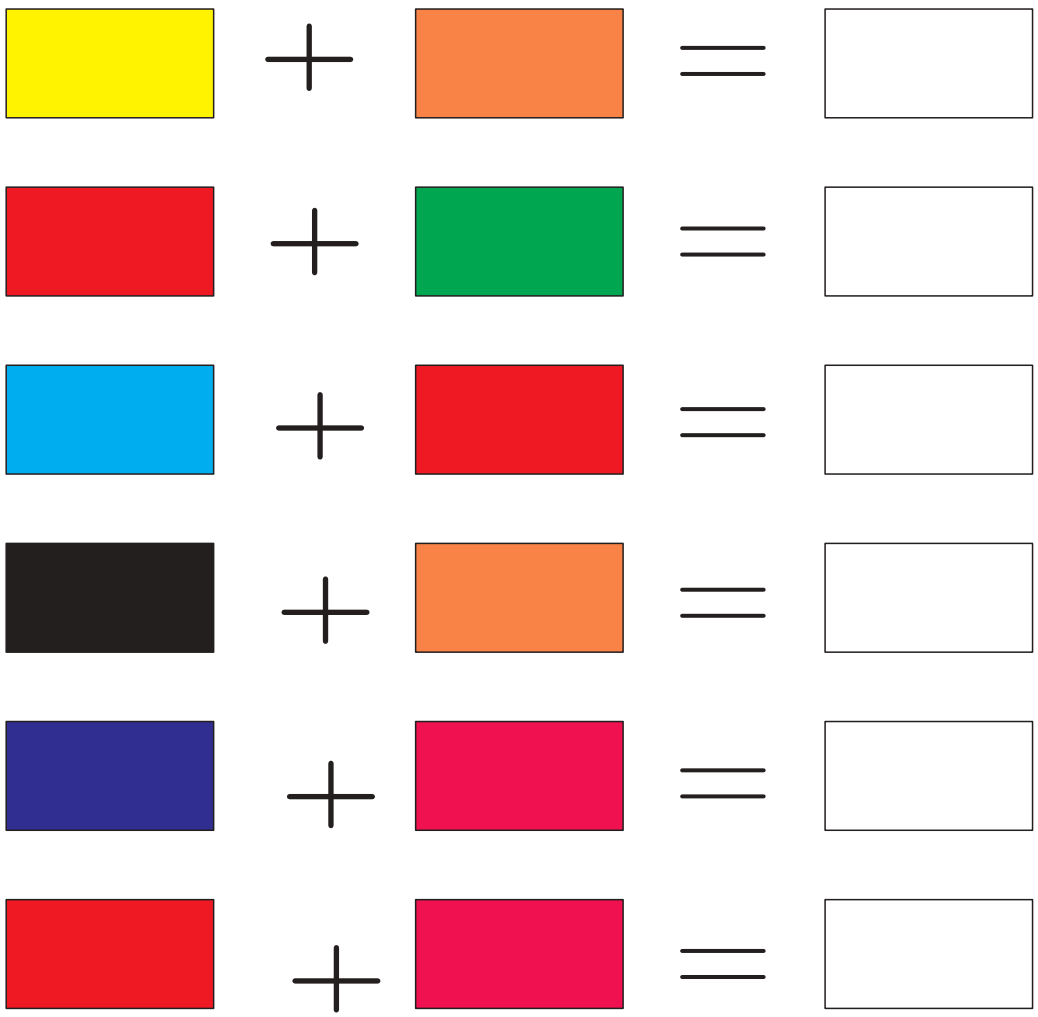

पाठ सात

इंद्रधनुष

D7V7D3

''पापा देखो, आसमान में इंद्रधनुष निकल आया है।'' आसमान की ओर इशारा करते हुए केशव ने कहा

''हां बेटा, इंद्रधनुष यानी रेनबो।'' रमन मुस्कुराए।

''पापा, कितना अच्छा होता अगर इंद्रधनुष हमारे घर में उत्तर आता....'' केशव मचल कर बोला।

''बेटा, इसमें कौन–सी बड़ी बात है? चलो, आज हम इंद्रधनुष को आसमान से उतार ही लेते हैं।'' रमन की मुस्कुराहट कुछ गहरी हो गई।

''वो कैसे पापा?'' उत्तर जानने को उत्सुक हो उठा केशव।

''उसका चित्र बनाकर।'' रमन हँसे।

''येस्स्स... यह हुई ना बात, लेकिन पापा, मेरे पास अच्छे रंग नहीं हैं।''

''अरे, पिछले रविवार को ही तो रंग दिलाए थे तुम्हें। भूल गए?'' केशव को याद करवाते हुए रमन बोले।

''अच्छा केशू, चित्रकारी बाद में कर लेना। पहले ध्यान से देखो इंद्रधनुष को। देखो, कितने सुंदर रंगों से मिल कर बना है यह। कौन–कौन से रंग हैं? ज़रा बताओ तो?'' इंद्रधनुष की ओर देखकर रमन ने केशव से पूछा।

''लाल, पीला, हरा, नीला, और....और.....''

रंगों के नाम बताते–बताते केशव अटक गया।

''आसमानी, नारंगी और बैंगनी।'' रमन ने केशव का वाक्य पूरा किया।

''बेटा, इंद्रधनुष के सबसे ऊपर कौन–सा रंग है?'' रमन ने फिर पूछा।

''लाल।'' तपाक से बोल पड़ा केशव।

''बिल्कुल सही। और आखिरी रंग कौन–सा है?''

''पापा, रंग तो दिख रहा है मुझे लेकिन नाम नहीं याद आ रहा।'' सोचते हुए केशव बोला।

''बेटा, सबसे नीचे वॉयलेट या बैंगनी रंग की रोशनी दिख रही है। ग़ौर से दिखो।''

''पापा, इंद्रधनुष कैसे बनता है?'' बात बदलते हुए केशव ने पिता से पूछा।

''यह तो बारिश की नन्हीं–नन्हीं बूंदों की कारीगरी है। पानी की ये बूंदें प्रिज़्म का काम करती हैं केशू।'' रमन ने समझाया।

''प्रिज़्म? वो क्या होता है पापा?'' केशव की उत्सुकता बढ़ गई।

''बेटा, आज मैं तुम्हें प्रिज़्म दिखाऊंगा और उसके काम करने का तरीक़ा भी समझाऊंगा। सूरज की रोशनी जब बारिश की छोटी बूंदों से होकर गुजरती है तो सात अलग–अलग रंगों में टूट जाती है। इसी वजह से इंद्रधनुष दिखाई देता है। अच्छा चलो, अब खाना भी खाओगे या इंद्रधनुश ही देखते रहोगे?''

लाड से केशव को हल्की चपत लगाते हुए रमन ने कहा।

''हां पापा। खाना खाने के बाद मुझे प्रिज़्म भी देखना है और बाद में इंद्रधनुष की तस्वीर भी तो बनानी है। बहुत व्यस्त हूँ आज मैं।''

केशव ने कुछ इस अदा से कहा कि रमन हंस पड़े और बेटे को साथ लेकर खाना खाने चल दिए ।

मौखिक

प्रश्न–1. सोचो और बताओ–

(1). इंद्रधनुष कितने रंगों से मिल कर बना है?

(2). इंद्रधनुष में कौन–से रंग होते हैं?

(3). इद्रधनुष के सबसे ऊपर कौन–सा रंग है?

(4). इंद्रधनुष का सातवाँ रंग कौन–सा है?

प्रश्न–2. सही शब्दों को चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।

(1). इंद्रधनुष के सबसे ऊपर .... रंग है। (लाल / हरा)

(2). इंद्रधनुष में आखिरी रंग .... है (हरा /बैंगनी)

(3). पानी की ये बूंदें .... का काम करती हैं। (प्रिज़्म /इंद्रधनुष)

(4). अरे, पिछले............................ को ही तो रंग दिलाए थे। (सोमवार/रविवार)

प्रश्न–3. जोड़कर नए शब्द बनाएँ :–

(1). ला — ल ______ / ज ______

(3). ह — रा ______ / म ______

(2). पी — ला ______ / ठ ______

प्रश्न–4. ' आ ' मात्रा के शब्द समझने का प्रयास करें :–

हरा

पीला

नीला

काला

ताला

प्रश्न–5.चित्रकारी –

इंद्रधनुष का चित्र बनाकर उसमें रंग भरिए।

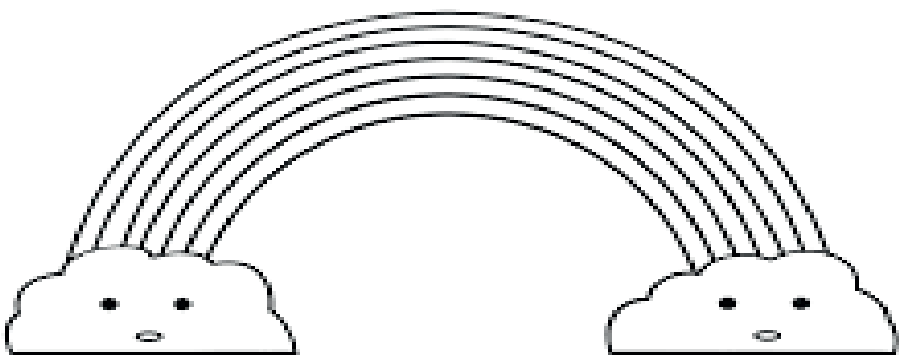

पाठ आठ

चीनू बत्तख

S7A4X2

जंगल में एक छोटा सा तालाब था। उसमें चीनू नामक एक सफेद बत्तख रहती थी। चीनू को घूमना–फिरना बहुत पंसद था। जंगल में वह विभिन्न रंगों के पशु–पक्षी देखती। उसे अपना सफेद रंग बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता। एक दिन चीनू ने अपने मन की बात एक हिरण से कही।

तुम सुनहीरी रंग लगाकर मेरी तरह बन जाओ

हाँ, तुम ठीक कहती हो

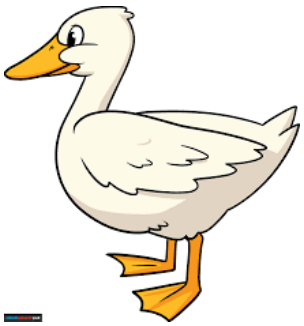

चीनू बत्तख ने किसी से रंग बनाना सीखे। जंगल में जाकर हल्दी का पौधा ढूंढा। अपनी चोंच से खोद कर हल्दी की गाँठ निकाली। उसको पीसा और पीला रंग बनाया। उसके बाद उसमें जरा सी रेत मिट्टी मिलाकर सुनहरी रंग तैयार किया। चीनू ने स्वयं को सुनहरी रंग लगा लिया। खुशी–खुशी चीनू जंगल घूमने गई। रास्ते में एक बंदर मिला।

सुनहरी चीनू! हा–हा–हा यह क्या रंग लगाया? मेरी तरह भूरी बन जाओ

ठीक है बंदर मामा

चीनू ने मिट्टी का लेप किया। अपना रंग भूरा बना लिया। भूरी–भूरी सी चीनू, जब जंगल में घूमने निकली तो राम चिरैया ने आवाज़ लगाई।

अरी चीनू! ये मिट्टी पोतकर कहाँ चली? मेरी तरह नीली बनो। सुंदर लगोगी

तूने ठीक कहा, नीले रंग में ज़्यादा सुंदर लगूँगी।

चीनू ने नीले फूल इकट्ठे किए। उनको पीस कर नीला रंग बनाया। अब चीनू नीले रंग में रंग गई। नीली चीनू खुशी से झूम कर जंगल घूमने लगी। जंगल में पेड़ पर चहकता हुआ तोता चीनू को कहता है–

मेरा हरा रंग कितना सुंदर! जैसे पेड़ के पत्ते। लालमिर्च सी मेरी चोंच बड़ी ही सुंदर लगे!

हरा रंग तो सबसे सुंदर है और लाल–लाल चोंच कितनी सुंदर

जंगल से हरे पत्ते और टेसू के लाल फूल लेकर चीनू वापस लौटी। पत्तों को पीसकर हरा रंग बनाया। फूलों से लाल रंग बनाया इस बार चीनू तोते जैसी हरी और लाल चोंच रंगवा कर बहुत खुश हुई। पंख फैलाकर छोटी–छोटी उड़ानें भरने की कोशिश करने लगी। जंगल में एक पेड़ की शाखा जो ज़मीन को छू रही थी, उस पर बैठ गई। उसी पेड़ पर एक कोयल बैठ कर गाना गा रही थी।

काली हूँ तो अच्छी हूँ कभी न मैली दिखती हूँ

हाँ काला रंग तो सबसे अच्छा है।

बेटा तुम्हारा सफेद रंग तो
सबसे सुंदर है सबकी बातों में
आकर तुम अपना मज़ाक क्यों बनवा रही हो?
तुम्हें सदा अपने पर भरोसा रखना चाहिए।

जी दादा जी
अब मुझे समझ आ गई।

चीनू घर वापस आई। लाल, हरा, नीला, पीला सभी रंग मिलाए। काला रंग तैयार किया इस बार चीनू ने काला रंग लगा लिया। उसी तालाब में कुछ दिनों से एक बूढ़ा हंस भी रहने आया था। वो रोज़ चीनू को परेशान देखता था। बूढ़े हंस को उस पर दया आई गई। वह चीनू से बोला–

चीनू ने तालाब में डुबकियाँ लगाईं और मल मल कर रंग उतारे। तालाब के दूसरे किनारे पर गई। साफ पानी में झाँका।

शब्दार्थ

शब्द		अर्थ
विभिन्न	–	अलग–अलग
स्वयं को	–	खुद को/अपने आपको
पोतकर	–	लेप करके
शाखा	–	पेड़ की डाल
भरोसा	–	विश्वास

नवीन शब्द

मिट्टी	बत्तख	बिल्कुल	हल्दी
सुनहरी	इकट्ठे	चहकना	परेशान
डुबकियाँ	बूढ़ा	चित्र	झाँकती

बातचीत के लिए

(क) आप में से किस–किस को जंगली पशु और पक्षियों के चित्र इकट्ठा करना अच्छा लगता है और क्यों?

(ख) इस कहानी में आए–पशु पक्षियों के नाम लिखिए।

(ग) आपको इस कहानी से क्या सीख मिली?

लिखिए

(क). चीनू को कौन–सा रंग पसंद नहीं था?

(ख). हिरण ने चीनू को क्या सुझाव दिया?

(ग). चीनू ने नीला रंग किसके कहने पर लगाया?

(घ). चीनू ने काला रंग कैसे बनाया?

(ङ). बूढ़े हंस ने चीनू को क्या समझाया?

रिक्त स्थान भरें

(क). जंगल में ..... रंगों के पशु–पक्षी रहते थे।

(ख). चीनू ने अपने मन की बात .....से कही?

(ग). चीनू ने ..... पीस कर पीला रंग बनाया।

(घ). .....ने चीनू को भूरा रंग लगाने को कहा।

(ङ). ..... को दया आई।

(च). हमें सदा अपने पर ..... रखना चाहिए।

मिलान करें

अ	ब
(क). विभिन्न रंगों के पशु–पक्षी	(1). हरा रंग बनाया
(ख). ये मिट्टी पोत कर कहाँ चली?	(2). जंगल में रहते थे।
(ग). हरे पत्ते पीस कर	(3). सबसे सुन्दर है।
(घ). लाल, पीला, हरा, नीला मिलाकर	(4). रामचिरैया ने कहा
(ङ). सचमुच मेरा सफेद रंग	(5). काला रंग बनाया।

–सही के लिए ✓ तथा गलत के लिए ✗ चिह्न लगाएँ:

(क). चीनू ने अपने मन की बात बंदर से कही। ☐

(ख). हिरण ने चीनू का मज़ाक उड़ाया तालियाँ बजाई। ☐

(ग). चीनू ने हरे पत्ते पीस कर काला रंग बनाया। ☐

(घ). बूढ़े हंस को चीनू पर दया आई। ☐

(ङ). चीनू ने मल–मल कर तालाब में नहा कर रंग उतारे। ☐

लिंग बदलें।

शेर – शेरनी

मोर – .....

लड़का – .....

नर – .....

सृजन संसार

1. बच्चे अपनी स्मरण पुस्तिका में पाँच पक्षियों तथा पाँच पशुओं के चित्र चिपकाकर उनके नाम लिखें।

2. शिक्षक बच्चों को भारतीय रंगोली परम्परा से अवगत करवाएं।

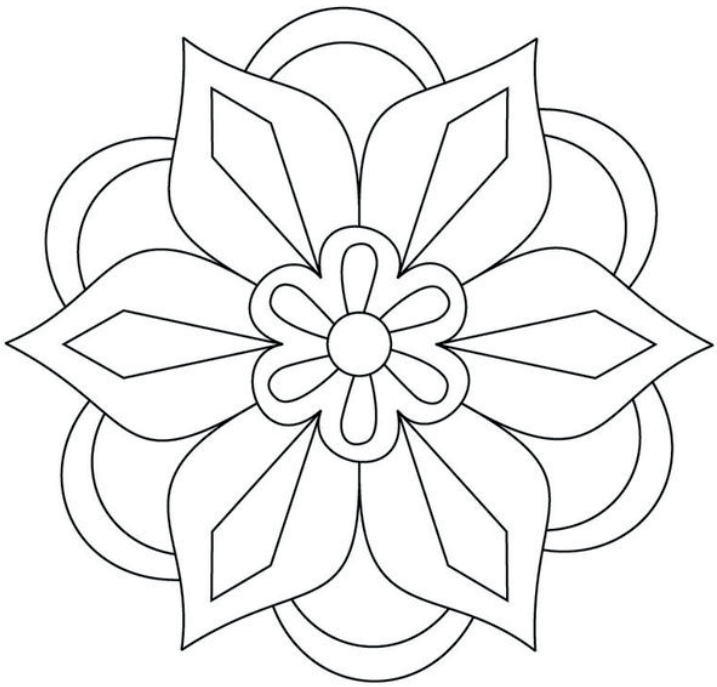

पाठ नौ

चार दिशाएँ

N3S1L2

एक पते की बात बताऊँ
तुम्हें दिशाओं का ज्ञान कराऊँ।

सूरज के सामने खड़े हो जाना,
पूर्व दिशा के दर्शन पाना।

पीठ के पीछे पश्चिम होगा,
इसमें भी कोई शक न होगा

बाएँ हाथ को तुम उठाओ,
उत्तर दिशा इसे बताओ।

अपना दायां हाथ उठाओ,
दिशा दक्षिण की इसे बताओ।

होती हैं कुल चार दिशाएँ,
पूर्व, पश्चिम, उत्तर दक्षिण।

यही है चारों दिशाओं का ज्ञान,
रहना न तुम इससे अनजान।

शब्दार्थ

ज्ञान – जानकारी

दर्शन – देखना

शक – संदेह

कुल – सारा

बातचीत के लिए

(क). कुल कितनी दिशाएँ होती हैं?

(ख). हम सूरज की तरफ़ मुँह करके खड़े हों तो बाँई ओर कौन–सी दिशा होगी?

(ग). हम सूरज की तरफ़ मुँह करके खड़े हो तो दाँई ओर कौन–सी दिशा होगी?

(घ). पता कीजिए कि आपके विद्यालय का खेल का मैदान किस दिशा में है?

लिखिए

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क). सूरज कौन–सी दिशा से निकलता है?

(ख). सूरज कौन–सी दिशा में डूबता है?

(ग). चारों दिशाओं के नाम लिखिए।

2. कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए–

(क). सूरज के .....

..... दर्शन पाना।

(ख). पीठ के .....

..... शक न होगा।

दिए गए शब्दों से वाक्य बनाएँ–

(क). सूरज–.....

(ख). पूर्व–.....

(ग). हाथ–.....

(घ). चार–.....

भाषा की समझ

1. वर्णों को मिलकर 'शब्द' बनते हैं। लेकिन जिन शब्दों का कुछ न कुछ अर्थ हो, उन्हें ही सार्थक शब्द कहते हैं। जैसे 'हाथ' एक सार्थक शब्द है। 'हथा' निरर्थक शब्द है।

दिए गए वर्णों को सही जगह लिखकर सार्थक शब्द बनाइए–

(क). रजसू – सूरज

(ख). नदर्श – .....

(ग). लकु – .....

(घ). तरउ –.....

(ङ). खाधो–.....

(च). ठपी–.....

2. विलोम विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखिए–

पराया

(क). अपना – .....

(ख). जाना – .....

पाना –.....

उठना –.....

चित्रकारी

1. नीचे दिए गए चित्र में दिशा के अनुसार अपने घर का मुख्यद्वार, कमरा, सीढ़ियाँ रसोईघर और स्नानघर अंकित करें।

संकेत– सुबह अपने घर की छत पर जाकर देखें कि सूरज किस ओर है। सूरज की ओर मुँह करके आप दिशाओं का ज्ञान लीजिए। ऐसा करने से आपको अपने घर के मुख्य द्वार, कमरा, सीढ़ियाँ, रसोईघर और स्नानघर की दिशा का ज्ञान आसानी से हो जाएगा।

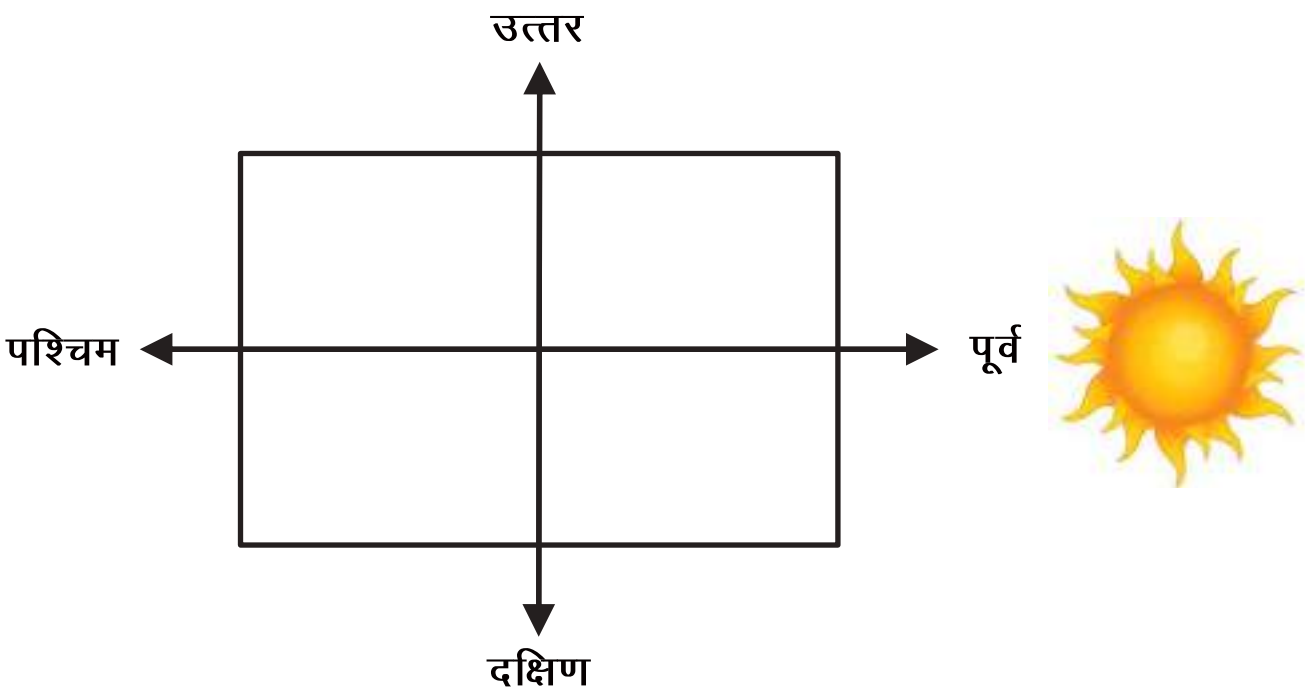

पाठ दस

गाजर

R2X8S1

दादा जी ने बगीचे में गाजर बोयी।
गाजर से दादा जी ने बोला, ''गाजर
जल्दी से मजबूत और लंबी हो जाओ''

जब गाजर लम्बी हो गई तो दादा जी उसे खींचने लगे उन्होंने अपना पूरा ज़ोर लगाया पर गाजर को बाहर न ला पाए।

दादा जी ने दादी को आवाज़ लगाई, दादी जी ने थामा दादा जी को। दादा जी ने थामा गाजर को। दोनों ने फिर ज़ोर लगाया मगर गाजर को दोनों भी बाहर निकाल न पाए।

तब दादी ने पौती को बुलाया, तो पौती ने थामा दादी जी को, दादी जी ने थामा दादा को, दादा जी ने थामा गाजर को सबने मिलकर जोर लगाया पर गाजर को निकाल न पाए।

तब पौती ने अपने कुत्ते को बुलाया
कुत्ते ने थामा पौती को, पौती ने थामा
दादीजी को, दादी जी ने थामा दादा जी को, दादा जी ने थामा गाजर को, सबने मिलकर जोर लगाया
आखिर मिलकर सबने गाजर को निकाल
ही डाला।

अभ्यास कार्य

1. बातचीत के लिए

(क) दादा जी ने खेत में क्या बोया?

(ख) दादा जी ने गाजर को क्या बोला?

(ग) गाजर बड़ी हो गई या छोटी रही?

लिखिए।

(क) गाजर को निकालने के लिए किस–किस ने मदद की?

(ख) दादा जी इतनी बड़ी गाजर का क्या करेंगे?

(ग) गाजर से क्या–क्या बनता है?

(घ) गाजर से बनी कौन सी वस्तु आपको पसन्द है?

3. शब्दों का खेल

शब्द पढ़कर अंतर समझिए

मन	–	मान	जन	–	जान
कम	–	काम	दम	–	दाम
नम	–	नाम	कर	–	कार
जग	–	जाग	चल	–	चाल

4. 'ा' 'आ' की मात्रा वाले शब्दों पर गोला ◯ लगाएँ।

मगर	हल	चाल	मकान	थाम
दादा	मच्छर	चल	कल	हल

5. सही शब्दों पर गोला ◯ लगाएँ।

दादा	ददा
गाजर	गजर
पौती	पौति
दादी	दादि

6. मनोरंजन

गाजर का एक चित्र बनाइए और उसमें रंग भरिए।

7. सोचिए और बताइए

गाजर खाने से हमारे शरीर को क्या–क्या लाभ होते हैं?

(शिक्षक बच्चों के साथ यह जानकारी साझा करें।)

8. गाजर का हलवा बनाने के लिए हमें क्या–क्या कार्य करना पड़ता है?

(शिक्षक बच्चों को बताने में सहायता करें)

9. पढ़ें समझें और लिखें।

दादा	–	दादी
नाना	–	नानी
पिता	–	माता
भाई	–	बहन
पौता	–	पौती

10. हिन्दी में गिनती ११ से २० तक।

ग्यारह – ११

बारह – १२

तेरह – १३

चौदह – १४

पंद्रह – १५

सोलह – .....

सत्रह – १७

अठारह – १८

उन्नीस – १९

बीस – २०

पाठ ग्यारह

वीर किसान

E4R3S9

सर्दी–गर्मी हार ना माने
खड़ा खेत में सीना ताने
फटे–पुराने कपड़े पहने
फिर भी होठों पर मुस्कान
जय हो तेरी वीर किसान।

हम सब की है भूख मिटाता
स्वयं है रूखी–सूखी खाता
भोजन, फल और दूध परोसे
मिला न पलभर तुझे आराम
जय हो तेरी वीर किसान।

दुर्बल तन है सच्चा मन है
घास फूस का सिंहासन है
वर्षा का जल छत से टपके
फिर भी गाए मंगल गान
जय हो तेरी वीर किसान

–चन्द्र कुमार शर्मा

शब्दार्थ

स्वयं	–	खुद	वीर	–	बहादुर
भोजन	–	खाना, अनाज	सिंहासन	–	राजा का आसन
दुर्बल	–	कमज़ोर	मंगल गान	–	भलाई की कामना करना

बातचीत के लिए

(1). क्या आपने कभी खेत में काम करते किसान को देखा है? उसके औज़ारों के नाम बताएँ।

(2). किसान हमारे लिए क्या–क्या उगाता है?

(3). यदि आपको खेती करने के लिए कहा जाए तो आप कैसे करेंगे?

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(1). खेत में सीना ताने कौन खड़ा रहता है?

(2). किसान किसकी भूख मिटाता है?

(3). कविता में किसकी जय कही गई है और क्यों?

(4). किसान का सिंहासन कैसा है?

खेल–खेल में

किसान का बैल खो गया है। अक्षरों को जोड़कर **'किसान का बैल'** बनाइए। रेखा खींचकर शब्दों को जोड़िए–

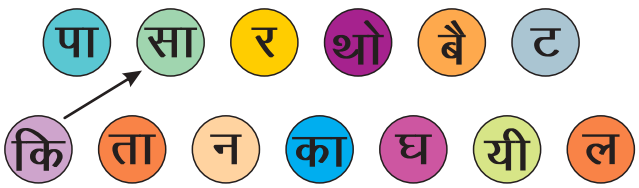

खेत में हल चलाते हुए किसान का चित्र बनाइए–

आइए, कुछ बनाएँ

पाठ बारह

तालाब

M8Z7K2

वर्षा या बाढ़ के जल से भरे हुए गड्ढे को तालाब कहते हैं। जिसमें मेंढक, मछलियाँ, साँप, केंकड़े, कच्छुए, कीड़े–मकोड़े आदि पाए जाते हैं। तालाब मानव तथा प्रकृति द्वारा बनते हैं। इनका उपयोग पानी इकट्ठा करने के लिए तथा खेतों की सिंचाई के लिए किया जाता है।

तालाब के किनारे पशु–पक्षी रहते हैं। सर्दियों के दिनों में, बहुत सारे सारस यहाँ आ जाते हैं। तालाब पर खूब चहल–पहल रहती है। हमें तालाब को स्वच्छ रखना चाहिए। जिससे हर मौसम में पक्षी यहाँ आते–जाते रहें तथा अन्य जीव–जन्तु भी खुशहाली से रह सकें।

शब्दार्थ

प्रकृति – कुदरत

पशु – जानवर

जल – पानी

पक्षी – पंछी, खग

मानव – मनुष्य

बातचीत के लिए

(क) तालाब किसे कहते है?

(ख) तालाब में कौन–कौन से जीव पाए जाते है?

(ग) तालाब कैसे बनते हैं?

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) तालाब के किनारे कौन-कौन से पशु–पक्षी रहते है?

(ख) सर्दियों में कौन-से पक्षी तालाब पर आते हैं?

(ग) तालाब को साफ रखना क्यों ज़रूरी है?

(ख). सही या गलत का चयन करें–

1. तालाब मानव और प्रकृति द्वारा बनते हैं। सही / गलत ( )
2. मछलियाँ तालाब में नहीं रहती हैं। सही / गलत ( )
3. तालाब का प्रयोग पानी इकट्ठा करने के लिए किया जाता है। सही / गलत।( )
4. हमें तालाब को स्वच्छ नहीं रखना चाहिए। सही / गलत ( )

(ग). निम्नलिखित चित्रों को शब्दों से मिलाएँ।

(1) सारस

(2) मछली

(3) साँप

(घ). सोचें और बताएँ

आप तालाब के पास होते तो उसे साफ–सुथरा रखने के लिए क्या करते?

(च). निम्न शब्दों के विलोम शब्द लिखें।

(क) दिन..... (ख) आगे .....

(ग) नया..... (घ) अच्छा.....

(ङ) प्रकाश.....

पाठ तेरह

चिड़िया

इक चिड़िया छैल छबीली सी,
हर रोज़ हमारे आती है।
मैं उठता हूँ जब बिस्तर से,
वह मधुर–मधुर कुछ गाती है।

वह कितनी सुन्दर प्यारी है,
मैं चाहूँ साथ मेरे खेले।
वह हाथ मेरे पर, आ बैठे,
और, चोग स्वयं मुझ से ले ले।

वह पास मेरे न आती है,
मन की मन में रह जाती है।
वह उड़ती फिरती डाल–डाल,
बस चोगा, खाने आती है।

कुछ चावल गेहूँ के दाने,
मुँह में रख उड़ जाती है।
वह चूँ–चूँ कर कुछ कहती है।
पर समझ में कुछ न आती है।

इक चिड़िया छैल छबीली सी,
हर रोज़ हमारे आती है।

साभार– श्री मनसा राम 'चंचल'

श्रुतलेख

चिड़िया

छैल

छबीली

बिस्तर

सुन्दर

1. बातचीत के लिए

(1). यह कविता आप को कैसी लगी?

(2). इस कविता में किसकी बात हो रही है?

(क). पक्षी (ख). जानवर

(3). चिड़िया कैसा गाती है?

(4). चिड़िया क्या खाती है?

2. रिक्त स्थान भरें:–

1. इक चिड़िया छैल ..... सी
   हर रोज हमारे .....है।

2. कुछ चावल ..... के दाने
   मूँह में रख ..... जाती है।

3.खेल–खेल में।

(क). चिड़िया का एक चित्र बनाएँ और उस में रंग भरें।

(ख). 'चिड़िया' शब्द सुनने पर आपके मन से चिड़िया के बारे में कौन से शब्द आए वे शब्द नीचे लिखें।

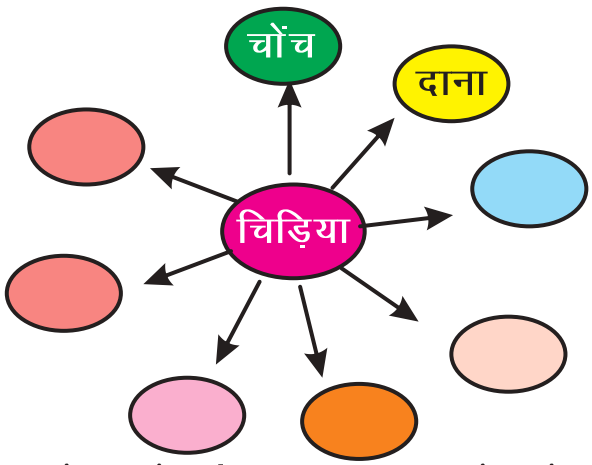

(ग). क्या आप ने अपने आँगन व आस–पड़ोस में कभी पक्षी आते देखे हैं। यदि हां, तो उनके नाम लिखिए।

1) ..... 2) ..... 3) .....

4) ..... 5) ..... 6) .....

4. चिड़िया को उसके घोंसले तक पहुँचने में उसकी सहायता कीजिए:–

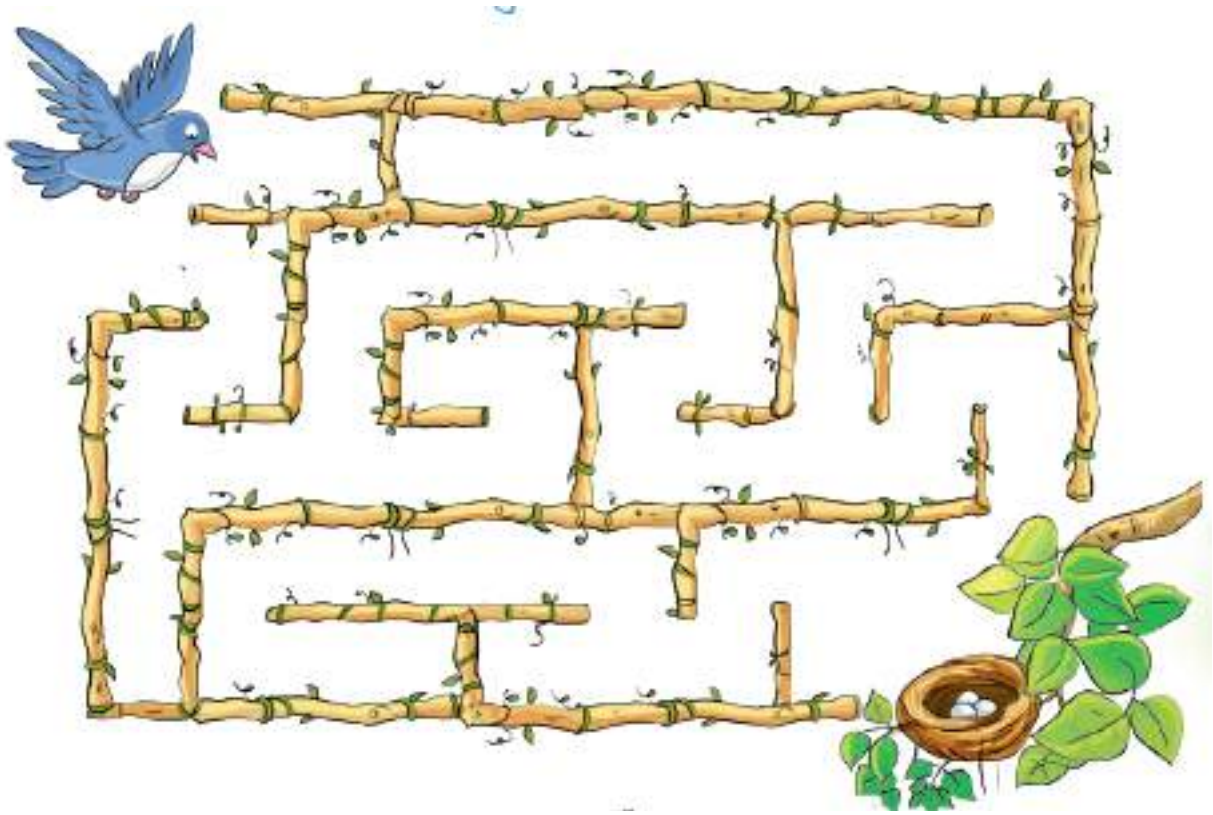

5. पढ़ें समझें और लिखें

मन – मान

नम – नाम

कम – काम

जग – जाग

जन – जान

शिक्षक विद्यार्थियों को ' ा ' की मात्रा का ज्ञान कराएं।

6. मिलान करें

चिड़िया

कौआ

तोता

कोयल

7. शुद्ध/सही शब्द पर गोला लगाएँ।

हाथी	–	हाथि
बिलली	–	बिल्ली
गाय	–	गाए
मौर	–	मोर
शेर	–	शैर

हिन्दी में गिनती २१ से ५१ तक लिखे

२१	–	इक्कीस	३६	–	छततीस
२२	–	बाईस	३७	–	सैंतीस
२३	–	तेईस	३८	–	अड़तीस
२४	–	चौबीस	३९	–	उनतालीस
२५	–	पच्चीस	४०	–	चालीस
२६	–	छब्बीस	४१	–	इकतालीस
२७	–	सत्ताईस	४२	–	बयालीस
२८	–	अट्ठाईस	४३	–	तैंतालीस
२९	–	उनतीस	४४	–	चौवालीस
३०	–	तीस	४५	–	पैंतालीस
३१	–	इकतीस	४६	–	छियालीस
३२	–	बत्तीस	४७	–	सैंतालीस
३३	–	तैंतीस	४८	–	अड़तालीस
३४	–	चौंतीस	४९	–	उनचास
३५	–	पैंतीस	५०	–	पचास

पाठ चौदह

नटखट बंदर

Q6K4G5

नटखट बंदर बड़ा ही सुन्दर,
सोच रहा कैसा यह अंबर।
नीला–नीला रंग है इसका,
जाने कैसा ढंग है इसका?
कभी बरसता इससे पानी
कभी खिले धूप मनमानी।
कभी चमकती बिजली चम–चम।
देख गगन की अद्‌भुत माया
नटखट बंदर समझ न पाया
कैसे गरजे बादल डम–डम
कैसे बरसे पानी छम–छम

शब्दार्थ

नटखट – चंचल, शरारती

अंबर – आकाश

मनमानी – अपने मन की मानना

ढंग – तरीका

अद्‌भुत – अनोखा

बातचीत के लिए

(क). जंगल में कौन–कौन से जानवर रहते हैं?

(ख). नटखट बदंर ने किसे देखा?

(ग). अंबर का रंग कैसा है?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क). नटखट बदंर किसे देखकर दंग रह गया?

(ख). अबंर से क्या बरसता है?

(ग). नटखट बंदर क्या नहीं समझ पाया?

आओ सुनें कहानी

अपने शिक्षक की सहायता से ' नकलची बंदर ' की कहानी कक्षा में सुनाएँ।

पाठ पंद्रह

मित्रता

W3B8I7

किसी वन में तालाब के किनारे एक पेड़ था। पेड़ के आस–पास घनी झाड़ियाँ थी। तालाब में एक कछुआ रहता था। दिन ढलने पर वह तालाब से बाहर आ जाता पेड़ पर एक कौवा रहता था और उसी पेड़ के इर्द–गिर्द झाड़ियों में एक हिरण भी रहता था। तीनों तालाब के किनारे खेलते, तालाब का पानी पीते और गपशप करते। इस प्रकार वे अच्छे मित्र बन गए थे। एक बार एक शिकारी उस जंगल में आया और हिरण के पैरों के निशान देख रात के समय वहाँ जाल बिछाकर चला गया। हिरण पानी पीने आया और जाल में फँस गया। उसकी पुकार सुनकर कौवा और कछुआ भी वहाँ आ गए। कौए ने कहा, '' मैंने शिकारी की झोपड़ी देखी है, मैं वहाँ जाकर उसे रोकता हूँ। तब तक तुम जाल से निकलने का प्रयास करो।'' कछुए ने कहा, ''मेरे जबड़े बहुत मजबूत हैं, तब तक मैं जाल काटने का प्रयास करता हूँ।'' कौवा तेज़ी से उड़कर शिकारी की झोंपड़ी के बाहर पेड़ पर उसकी प्रतीक्षा करने लगा। इधर कछुए ने पूरी ताकत लगाकर जाल काटना शुरू किया। सुबह होते ही शिकारी बाहर निकला तो कौए ने उसके सिर पर बीट कर दी। वह सिर साफ करने झोंपड़ी में चला गया।

बाहर आया तो कोए ने फिर वही प्रक्रिया दोहराई। इस बार शिकारी अपना सिर साफ कर के छतरी लेकर बाहर आया और तेज़ी से तालाब की ओर चल पड़ा। कौवा वेग से उड़कर दोस्तों के पास पहुँचा और सूचना दी कि शिकारी पहुँचने ही वाला है। लगभग सारा जाल कट चुका था। एक–आध रस्सी रह गई थी। तभी शिकारी आता दिखाई दिया। तीनों मित्रों ने एक साथ जोर लगाया और हिरण मुक्त हो गया। फुर्ती से भागकर हिरण

झाड़ियों में जा छिपा, कौवा पेड़ पर पहुँच गया, पर रात–भर का थका–हारा कछुआ वहीं बेहोश हो गया। शिकारी कछुए को झोले मे डाल चल पड़ा। हिरण ने मित्र को मुसीबत में देखा तो शिकारी से कुछ दूरी पर सामने आकर लँगड़ाकर चलने का नाटक करने लगा। शिकारी झोले को पेड़ पर लटकाकर हिरण के पीछे लपका। हिरण तेजी से पलटा और झोले को मुँह में पकड़कर तालाब तक पहुँचा और पानी में छोड़ दिया। तीनों मित्र अब सुरक्षित थे। शिकारी ताकता ही रह गया।

–''जातक कथा''

अभ्यास

1. बातचीत के लिए

(क) आप अपने मित्रों की सहायता कैसे करते हैं?

(ख) शिकारी झोले को पेड़ पर लटकाकर क्यों भागा?

लिखिए

(क) कछुआ बेहोश क्यों हो गया?

(ख) शिकारी छाता लेकर क्यों निकला था?

(ग) हिरण लंगड़ाने का नाटक क्यों कर रहा था?

2. समान अर्थ वाले शब्दों को मिलाएँ

वन	पास
ताकता	कोशिश
इर्द–गिर्द	आजाद
नज़दीक	जंगल
प्रयास	इंतज़ार
प्रतीक्षा	देखता
मुक्त	आस–पास

3. कछुआ पानी में रहता है तो दिए गए जीव कहाँ रहते हैं? कोष्ठक में दिए गए विकल्प की सहायता से लिखें।

बंदर – ..... (समुद्र / पेड़)

ऊँट – ..... (मरूस्थल / जंगल)

मधुमक्खी – ..... (घोसला / छत्ता)

खरगोश – ..... (बिल / नदी)

गिलहरी – ..... (दीवार / पेड़)

4. पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थः–

प्रकार	–	तरह
पुकार	–	सहायता के लिए आवाज लगाना
प्रयास	–	कोशिश
प्रतीक्षा	–	इंतज़ार
प्रक्रिया	–	किसी काम को करने का शुरू से अंत तक का तरीका
वेग	–	तेज़ी से, गति
सूचना	–	समाचार
सुरक्षित	–	बिना किसी खतरे के।

5. शिक्षक द्वारा समझाया जाएः–

पाठ में 'उद्धरण चिह्न' एवं 'योजक युक्त युग्म' शब्द प्रयुक्त हुए हैं। विद्यार्थियों को समझाया जाए कि लगभग समान अर्थ वाले शब्दों के बीच योजक लगता है जैसे एक–आध, इर्द–गिर्द, थका–हारा। किसी पात्र द्वारा ज्यों का त्यों वाक्य उद्धरण चिह्न में रखा जाता है।

6. मौखिक गतिविधि

मित्रता सें संबंधित कोई कहानी कक्षा में सुनाएँ अथवा अपने मित्रों के बारे कक्षा में कुछ वाक्य सुनाएँ।

(चित्र कथा निर्माण)

नीचे दिए गए चित्रों को देखकर कहानी बनाएँ और कक्षा में सुनाएँ–

एक समय की बात है, दो मित्र थे– चींटी. और चिड़िया.....

.....

.....

.....

रिक्त स्थान भरते हुए कहानी पूरी कीजिए।

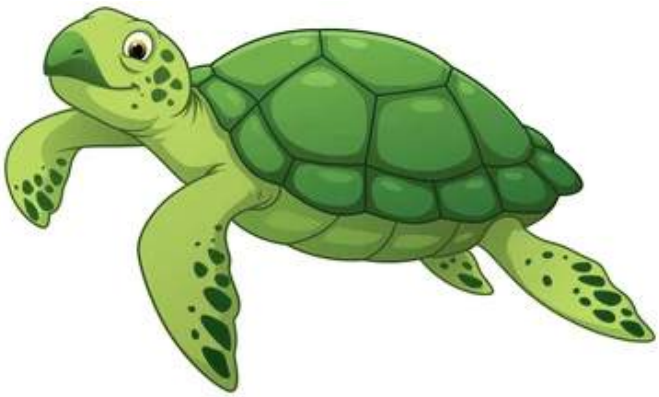

बच्चो, कछुए और खरगोश की कहानी तो सब को पता है। यदि नहीं, तो पहले अपने शिक्षक से सुनिए और फिर नीचे लिखी कहानी में छूटे हुए अंशों को भरकर इस कहानी के लेखक बनिए–

– एक जंगल में एक खरगोश और कछुआ रहते थे। खरगोश को अपनी .....गति पर घमंड था। उसने कछुए को नीचा दिखाने की सोची और उसे प्रतियोगिता में .....लगाने का निमंत्रण दिया। कछुआ ..... हो गया। दौड़ शुरू हुई और खरगोश तेजी से भागने पर जल्दी ही थक गया। उसने पीछे..... पर उसे दूर तक कछुआ आता हुआ दिखाई न दिया। उसने कुछ देर आराम करने ..... । कछुआ लगातार चलता रहा और,..... को सोते हुए देखकर वह आगे बढ़ गया। काफी देर सोने के बाद खरगोश की..... तो उसने पीछे देखा पर उसे ..... वह जल्दी–जल्दी भागा पर तय स्थान पर पहुँच कर उसने देखा कि..... चुका था।

पाठ सोलह

पिकनिक

पिकनिक स्थल पर आकर पिंकू की खुशी का ठिकाना न था। अपने और मौसी के परिवार के साथ पिकनिक मनाने आया पिंकू मौसेरे भाई–बहनों के साथ खेल–कूद में व्यस्त था। अलग–अलग टोलियाँ बन गईं थीं। बड़ों का अलग समूह और बच्चों की अलग टोली। खाते–पीते, गपशप करते शाम हो गई। पिकनिक स्थल में फूलों की सुंदर–सी क्यारी में एक पीला फूल सबसे अलग अपनी छटा बिखेर रहा था। उस पर बहुत से कीट–पतंगे मंडरा रहे थे जबकि ढेर सारे लाल फूल दिखने में तो सुंदर लग रहे थे लेकिन सबका ध्यान उस अलग–थलग से खड़े पीले फूल पर ही जा रहा था। पिंकू को यूं पीले फूल को ग़ौर से देखते हुए उसके पिताजी पास आए और कहने लगे, ''बेटा, समूह में रहना अच्छी बात होती है। लेकिन ज़रूरी नहीं हर समूह में आपके हुनर की क़दर ही हो और जहाँ आदर और सम्मान न हो वहां कभी नहीं रहना चाहिए। इस पीले फूल को देखो। अकेले रहकर भी अपनी ही मस्ती में झूम रहा है और सभी के आकर्शष का केंद्र बना हुआ है। हम सभी को अपने गुणों का पता होना चाहिए। दूसरों से पहले खुद की क़ीमत का ज्ञान होना ज़रूरी होता है।''

''चलो जी, अब वापिस चलें आज तो पिकनिक में सचमुच बहुत आनंद आया।'' पिंकू के मौसा जी का आदेश सुनकर सभी जल्दी–जल्दी सामान समेटने लगे।

अभ्यास

प्रश्न–1. बातचीत के लिए

1. पिंकू प्रसन्न क्यों था?
2. पिकनिक स्थल पर पिंकू के परिवार के साथ और किसका परिवार आया था।
3. फूलों की क्यारी में कौन से रंग का फूल सबसे अलग था?
4. पीले फूल की प्रशंसा किसने की?
5. जहां आदर और कदर न हो, क्या वहां रहना चाहिए?

प्रश्न–2. शब्दों का खेल।

(क). नीचे दिए गए अक्षरों की ध्वनि पहचानें और लिखने का अभ्यास कीजिए।

च – ..... स –.....

ह – ..... ब –.....

र – ..... श –.....

ल – ..... ग –.....

अ – ..... न –.....

म – ..... छ –.....

(ख). नीचे दी गई ध्वनियों को सुनिए और बोलिए।

च + ा ..... स + ा –.....

ह + ा ..... ब + ा –.....

र + ा ..... श + ा –.....

ल + ा ..... ग + ा –.....

अ + ा ..... न + ा –.....

म + ा ..... छ + ा –.....

(ग). नीचे दिए गए शब्दों को सुनिए और बताइए कि पहली ध्वनि कौन–सी है, दूसरी ध्वनि कौन–सी है?

च + ा + च + ा – चाचा स + ा + ग– साग

र + ा + ज + ा – राजा ब + ा +ग –बाग

पाठ सत्रह

देखो–देखो आए बादल

M4J6R2

देखो–देखो आए बादल
नीले नभ पर छाए बादल
हाथी जैसे सूँड उठाए
मोटे–मोटे काले बादल

बिना पंख के उड़कर आते
संग हवा के फिर मुड़ जाते
जब मन चाहे जल बरसाते
वरना गड़गड़ शोर मचाते

भर गए ताल सरोवर सारे
फूल खिले हैं प्यारे–प्यारे
नाचे मोर, पपीहा गाए
पानी जब बरसाते बादल

खेतों में हरियाली छाई
घर–घर में खुशहाली आई
उमड़–उमड़ जब आते बादल
मेरे मन को भाते बादल

चन्द्र कुमार शर्मा

शब्द ज्ञान

नभ	–	आकाश
ताल	–	तालाब
सरोवर	–	झील
वरना	–	अन्यथा
भाते	–	अच्छे लगते

बातचीत के लिए

1. बादल बिना पंखों के कैसे उड़ते हैं?
2. आपको कौन–सा मौसम सबसे अच्छा लगता है और क्यों?
3. आपको बारिश के मौसम की सबसे अच्छी बात क्या लगती है?

कविता के आधार पर उत्तर लिखिए–

1. काले बादल किसके जैसे दिखाई देते हैं?
2. बादल कैसे शोर मचाते हैं?
3. वर्षा आने पर कौन–सा पक्षी नाचने लगता है?

शब्दों का खेल

1. 'बादल' शब्द सुनकर आपको मोर, बिजली आदि की तरह अन्य कौन–कौन से शब्द याद आते हैं? उन शब्दों को लिखिए और आपके शब्द 'बादल' शब्द के साथ कैसे जुड़ते हैं, कक्षा में सभी को बताइए–

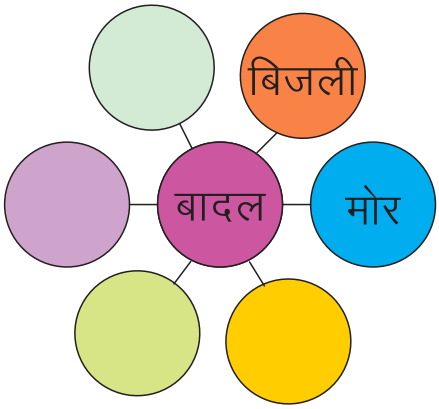

2. कविता में देखकर सही शब्दों से रिक्त स्थान भरें–

(i). नीले ..... छाए बादल।

(ii). नाचे मोर ..... गाए।

(iii). खेतों में ..... छाई।

(iv). मेरे मन को ..... बादल।

रंग भरिए

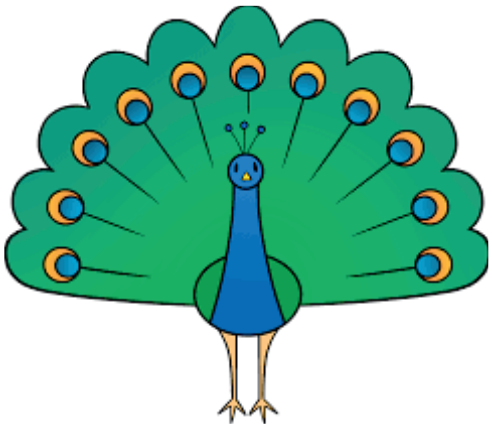

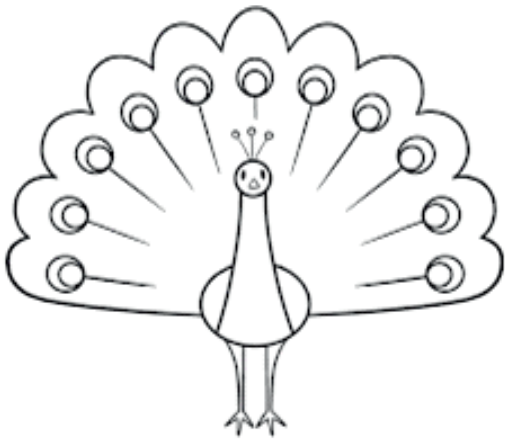

पाठ
अठारह

प्यारे–प्यारे चंदा मामा

K3U6A5

प्यारे–प्यारे चंदा मामा
बात पते की मुझे बताना
टिम–टिम करते तारे चुनकर
सुंदर–सा हार बनाओगे!
मेरे घर कब आओगे?

घटते–घटते घट जाते हो
बढ़ते–बढ़ते बढ़ जाते हो
घटने और बढ़ने का कारण
मुझको कब समझाओगे?
मेरे घर कब आओगे?

अपने घर का पता हमें
क्या तुम न बतलाओगे?
उड़नखटोले में बैठाकर
चन्द्रलोक दिखलाओगे!
कहा था दादी–नानी ने
परियों की बात सुनाओगे!
मेरे घर कब आओगे?

गर्मी की छुट्टियाँ आने दो
बरसात के बादल छाने दो।
तब मामा के घर जाने को
हम चन्द्रयान बनवाएँगे।
टिम–टिम तारे चुनने को।
हम चन्द्रलोक को जाएँगे।

चन्द्र कुमार शर्मा

शब्दार्थ

सुंदर–सा	–	प्यारा–सा
कारण	–	वजह
उड़नखटोला	–	उड़ने वाला काल्पनिक विमान
चन्द्रलोक	–	चाँद की दुनिया
चन्द्रयान	–	चन्द्रमा पर जाने वाला यान
बरसात	–	वर्षा ऋतु

बातचीत के लिए

1. बच्चे चाँद को मामा क्यों कहते हैं?
2. चाँद कब पूरा दिखाई देता है और कब गायब हो जाता है?
3. क्या आपने दादी/नानी से परियों की कहानियाँ सुनी हैं?

सोचिए और लिखिए

1. दिए गए शब्दों से प्रश्न बनाइए–

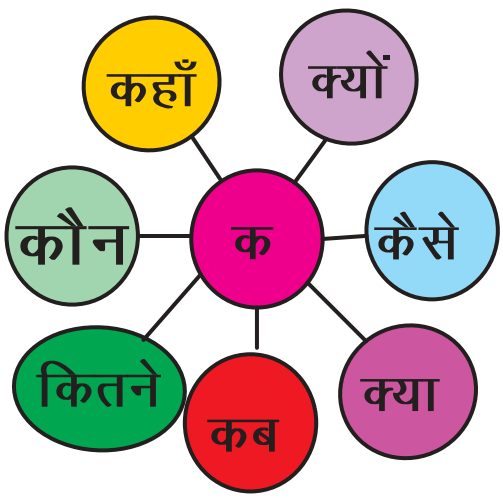

मेरे घर कब आओगे?

1. .....
2. .....?
3. .....?
4. .....?
5. .....?
6. .....?
7. .....?

2. कविता के आधार पर रिक्त स्थानों को भरें–

(क). टिम–टिम करते .....

(ख). घटते–घटते .....

(ग). मेरे घर .....

(घ). परियों की बात .....

आईए, कुछ बनाएँ

अपने शिक्षक की सहायता से ''चन्द्रयान–3'' का चित्र बनाएँ।

नोट्स

नोट्स

नोट्स